गुलज़ार : कविता, कहानी और सिनेमा का त्रिवेणी संगम

पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

मानविकी संकाय

राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

वर्ष:2025

शोध निर्देशका

डॉ० सुनीता कुमारी गुप्ता

सहायक प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

विवेक कुमार चौधरी

यू० जी० सी० नेट उत्तीर्ण

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

भूमिका:

गुलज़ार हिंदी साहित्य सिनेमा संगीत एवं गीत की दुनिया में प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं, जो मानविक भावनाओं को शब्दों में ढालने की अनूठी विशेषता के लिए जाने जाते हैं। गुलज़ार एक कवि, कहानीकार व गीतकार से बढ़कर संवेदनाओं के शिल्पकार भी हैं, जिन्होंने अपने लेखन,निर्देशन और संगीत बद्ध शब्दों के माध्यम से सिनेमा और साहित्य को नई ऊंचाइयाँ प्रदान की है। इनकी रचनाएँ एक तरफ तो साहित्यिक परंपराओं से जुड़ी है, वहीं दूसरी और समकालीन समाज के धड़कनों को भी प्रतिबिंबित करती है।

गुलज़ार हिंदी साहित्य सिनेमा और संगीत के उन दुर्लभ रचनाकारों में से एक हैj जिन्होंने शब्दों के माध्यम से भावनाओं को न केवल व्यक्त किया है, बल्कि उन्हें जीवंत भी बना दिया है उनकी रचनात्मक यात्रा कविता कहानी और सिनेमा इन तीनों विधाओं का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करती है, जो उनकी साहित्यिक गहराई और दृश्यात्मक सोच को दर्शाता है।

"गुलज़ार की कविता, कहानी और सिनेमा का त्रिवेणी संगम" पर यह शोध उनके रचनात्मक सफर का व्यापक अध्ययन करेगा। गुलज़ार की कविताएँ गहरी संवेदनाओं से ओत - प्रोत है जिनमें, प्रेम, विरह, सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाएँ एक नए अंदाज में व्यक्त होती हैं।

गुलज़ार की कहानियाँ जीवन के साधारण से दिखने वाले लेकिन असाधारण पहलुओं को छूती है साथ-ही-साथ उनके सिनेमा में एक गहराई प्रतीकात्मकता और संवेदनशीलता दिखाई देती है।

यह अध्ययन गुलज़ार की कविता, कहानी और सिनेमा को अंतरसंबंधों को विश्लेषित करेगा और यह समझने का प्रयास करेगा की कैसे उन्होंने अपनी कहानियों की कविता जैसी लयात्मकता और अपने सिनेमा को साहित्यिक सौंदर्य प्रदान किया है। उनकी काव्यात्मक भाषा प्रतिकों का प्रयोग संवादों के सादगी और गहराई तथा फिल्म निर्माण की दृष्टि को केंद्र में रखते हुए यह पता लगाएगी कि उनकी रचनात्मकता कैसे तीनों विधाओं को एक साथ जोड़ती है।

गुलज़ार के साहित्य और सिनेमा की विशेषता यह है कि वह समाज, व्यक्ति और स्मृतियों की जटिलताओं को अत्यंत सहजता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनका लेखन व्यक्तिगत अनुभव से प्रेरित होते हुए भी बस एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह शोध इस बात की भी पड़ताल करेगा की गुलज़ार की कविता और कहानियाँ उनके सिनेमा को कैसे प्रभावित करती है और उनके फिल्मों के दृश्या-त्मक पहलू उनकी साहित्यिक संवेदनाओं को किस प्रकार से समृद्ध करते हैं।

गुलज़ार के शब्दों में एक अनूठा संगीत, उनकी कहानियों में कविता की लय और सिनेमा में साहित्यिक गहराई मिलती है। यह त्रिवेणी संगम ही उनके साहित्य और सिनेमा की दुनिया में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

इस शोध का उद्देश्य गुलज़ार की बहु-आयामी रचनात्मकता को समझने और उनके योगदान का विश्लेषण करना है, ताकि यह जाना जा सके कि वह शब्दों, कहानी और सिनेमा के माध्यम से कैसे अपनी एक अलग पहचान बनाते हैं और समाज को प्रभावित करते हैं।

परिकल्पना:

शोध परिकल्पना को कार्य के रूप में परिकल्पना या कार्यात्मक परिकल्पना भी कहते हैं। यह परिकल्पना किसी-न-किसी सिद्धांत पर प्रेरित होती है। साथ ही शोधकर्ता उस परिकल्पना की उद्घोषणा विश्वास व दृढ़ता के साथ करता है और उसके अभिलाष होती है कि उसके द्वारा की गई परिकल्पना सत्य सिद्ध साबित हो ।

"गुलजार की कविता, कहानी और सिनेमा का त्रिवेणी संगम" शीर्षक को लेकर मेरे मन में जो चेतना जागृत हुई है उसको मैं बड़ी सरलता के साथ इस शोध के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा।

यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि गुलज़ार के कविता कहानी और सिनेमा तीन अलग-अलग विद्धा होते हुए भी एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उनके लेखन और फिल्म निर्माण में जो अंतर-संबंध है वह न केवल उनकी बहुआयामी प्रतिभा को दर्शाता है, बल्कि साहित्य और सिनेमा के बीच की सीमाओं को धुंधला भी करता है। इससे संबंधित

विभिन्न बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए विभिन्न पुस्तकों और अन्य उपकरणों से मिली जानकारी को सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करने का हर संभव प्रयास करूंगा।

उद्देश्य:

गुलज़ार के कविता, कहानी और सिनेमा के शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1. गुलजार के कविता का विश्लेषण, काव्य रचना में प्रयुक्त प्रत्येक भाषा, बिंब व भाव के साथ अध्ययन करना
2. कहानी व पटकथा लेखन को उनकी कहानियों को पटकथाओं के माध्यम से तथ्य को समझना वह विश्लेषण करना
3. सिनेमा में काव्यात्मकता को उनकी कविता की लयात्मकता व संवेदनशीलता के माध्यम से खोज करना
4. भाषाई विशेषताओं का अध्ययन उनकी भाषा शैली, संवाद, लेखन एवं गीतों के संदर्भ में करना

5. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण उनकी रचनाओं में प्रस्तुत सामाजिक सरोकारों मानवीय संवेदनाओं स्मृतियों व अनुभवों की भूमिका को समझना
6. साहित्य और सिनेमा के अंतर - संबंधों के तहत इन्होंने साहित्य और सिनेमा के बीच किस प्रकार की सीमाओं को तोड़ा है इसकी पड़ताल करना
7. समकालीनता और प्रासंगिकता को उनकी रचनाओं के माध्यम से देखना की यह आज के समाज व युवा पीढ़ी को कैसे प्रभावित करता है

शोध प्रविधि:

इस शोध में मैं वर्णनात्मक और गुणात्मक शोध प्रविधियाँ का उपयोग करूंगा साथ ही इस शोध के अंतर्गत गुलजार की काव्य रचनाओं कहानियों और सिनेमांओं का गहन अध्ययन करूंगा जिससे यह समझा जा सकेगा कि इन तीनों विधाओं में उनकी रचनात्मकता किस प्रकार परिलक्षित होती है।

1. **शोध की प्रकृति:** यह शोध एक साहित्यिक और फ़िल्म अध्ययन पर आधारित गुणात्मक शोध होगा जिसमें मैं गुलजार की कृतियों का विषयगत शैलीगत व सौंदर्यात्मक विश्लेषण करूंगा।
2. **आंकड़ा संकलन:** इसमें शोध के लिए प्राथमिक व द्‌वितीय स्रोतों का उपयोग किया जाएगा।
   (क) **प्राथमिक स्रोत:** गुलजार के कविताएँ, गीतों, कहानियों पटकथाओं के साथ-साथ उनके द्‌वारा निर्देशित फिल्मों एवं लिखित संवाद व साक्षात्कार तथा भाषणों को शामिल करूंगा।
   (ख) **द्‌वितीयक स्रोत:** साहित्यिक आलोचनाओं समीक्षाओं शोध पत्रों एवं इन पर लिखित पुस्तकों को शामिल करूंगा।
3. **विश्लेषण की प्रक्रिया:** इसके अंतर्गत निम्नलिखित विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं को अपनाऊंगा ।
   (क) **विषय-वस्तु विश्लेषण:** गुलजार की कविताओं कहानियों और फिल्मों के विषय-वस्तु की तुलना करना एवं अंतर-संबंधों की जांच करना।

(ख) **शैलीगत अध्ययन:** भाषा, शिल्प अलंकार व बिंबो का उनके काव्यों में प्रयुक्तता के संदर्भ में विश्लेषण करना।

(ग) **तुलनात्मक अध्ययन:** इसके अंतर्गत शोध प्रविधि में गुलजार की साहित्यिक और फिल्मी कृतियों के बीच सामान्ता व असमानता का अध्ययन करूंगा।

(घ) मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण के अंतर्गत मैं उनकी रचनाओं में व्यक्त मानवीय संवेदनाओं, भावों व सामाजिक मुद्दों का विश्लेषण करूंगा।

इस शोध प्रविधि के माध्यम से यह समझाने का प्रयास करूंगा कि गुलजार की विविध रचनाएँ किस प्रकार एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। एवं रचनाओं में किस प्रकार त्रिवेणी संगम परिलक्षित होता है।

शोध कार्य का प्रारूप:

"गुलज़ार: कविता, कहानी और सिनेमा का त्रिवेणी संगम"

भूमिका:

1. प्रतिपादन प्रणाली
2. प्रस्तुत विषय का औचित्य
3. आभार

अध्यायीकरण:

प्रथम अध्याय: गुलज़ार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. गुलज़ार के व्यक्तित्व का विविध आयाम
2. गुलज़ार का रचना संसार

द्वितीय अध्याय: गुलजार के कविता, कहानी और सिनेमा का दृश्यात्मक अध्ययन

1. गुलज़ार द्वारा निर्देशित एवं लिखित फिल्मों का संक्षिप्त परिचय
2. गुलज़ार के सिनेमा में कविता और साहित्य का प्रभाव

3. गुलज़ार के संवाद गीत व पटकथा लेखन की विशेषताएँ

तृतीय अध्याय: गुलजार की कविता, कहानी और सिनेमा में अंतःसंबंध

1. कविता कहानी और सिनेमा में अंत:संबंध
2. सिनेमा में गुलज़ार की काव्यात्मकता का प्रभाव
3. तीनों विधाओं का संगम और उनकी विशिष्ट रचनात्मकता

चतुर्थ अध्याय: गुलजार का समकालीन साहित्य और सिनेमा पर प्रभाव

1. गुलजार की रचनाओं की प्रासंगिकता
2. साहित्य और सिनेमा के क्षेत्र में योगदान
3. नई पीढ़ी के कवियों लेखकों एवं फिल्म निर्माताओं पर इनका प्रभाव
4. गुलज़ार की लोकप्रियता व वैश्विक पहचान

पंचम अध्याय: गुलजार की कविता, कहानी और सिनेमा की भाषा एवं शैली

1. उर्दू एवं हिंदी का प्रयोग

2. बोलचाल की शैली
3. भाषा, प्रतीक, बिंब और अलंकार का प्रयोग
4. पात्रों द्वारा शब्दावलियों का प्रयोग
5. मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग

संदर्भ ग्रंथ सूची:

क्र० स०	पुस्तक	लेखक	प्रकाशन
1.	गुलज़ार की दुनिया (आलोचनात्मक पुस्तक)।	विश्वनाथ त्रिपाठी	राजकमल, 2010
2.	गुलज़ार: एक बस्ती के बीच से (व्यक्तित्व विवरण)	सत्य सरन	हार्पर कॉलिंस इंडिया,2014
3.	शब्दों का सफर: गुलज़ार के साथ (साक्षात्कार)	नसीम सईद	किताब घर, 2017
4.	हिंदी साहित्य का इतिहास (साहित्यिक योगदान)	रामचंद्र शुक्ल	लोक भारती, 2015
5.	गुलज़ार साहब: हजार राय मुड़कर देखें (जीवनी)	यतींद्र मिश्र	वाणी प्रकाशन, 2024
6.	चांद पुखराज का (कविता संग्रह)	गुलज़ार	हिंदी पॉकेट बुक, 1968
7.	गुलज़ार (जीवनी संग्रह)	गुलज़ार	साहित्य अकादमी, 2006

आधार ग्रंथ:

क्र० स०	पुस्तक	लेखक	प्रकाशन
1.	पुखराज (कविता संग्रह)	गुलज़ार	रूपा एंड कंपनी, 2005
2.	रावी पार (संस्मरण)	गुलज़ार	राधा कृष्ण, 1986
3.	त्रिवेणी (त्रिपदी कविता संग्रह)	गुलज़ार	रूपा एंड कंपनी ,2002
4.	रात पश्मीने की (कविता संग्रह)	गुलज़ार	रूपा एंड कंपनी, 2002

5.	धुआँ (लघु कथा)	गुलज़ार	संभावना, 2003
6.	प्लूटो (कविता संग्रह)	गुलज़ार	वाणी प्रकाशन, 2013
7.	किताबें (कविता संग्रह)	गुलज़ार	राधाकृष्ण ,2016

नोट: शोध प्रारूप में आवश्यकता पड़ने पर शोध निर्देशिका के अनुसार आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशिका

डॉ सुनीता कुमारी गुप्ता

सहायक प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

(झारखण्ड)

शोधार्थी

विवेक कुमार चौधरी

यू० जी० सी०नेट उत्तीर्ण

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

(झारखण्ड)